Paper IV

Social Demography

Unit II

Topic : Thomas Double day

डबलडे का आहार सिद्वान्त

(Diet Theory of Thomes Double day)

By

Dr. Archana Mishra

डबलडे का आहार सिद्वान्त

(Diet Theory of Thomes Double day)

थामस डबलडे जो कि अंग्रेज अर्थशास्त्री एवं दार्शनिक थे इन्होनें Sadler की प्रजननशीलता के सिद्वान्त के 20 वर्ष पश्चात् अपना जनसंख्या के सम्बन्ध में अपने सिद्वान्त को आहार सिद्वान्त (Diet Theory) के नाम से प्रस्तुत किया । इन्होने अपने सिद्वान्त के अर्न्तगत जनसंख्या वृद्धि के निर्धारण में खाघ पूर्ति के तत्वों को विशेष महत्व प्रदान किया है। इनके अनुसार खाद्य पदार्थो की कितनी अधिक मात्रा में पूर्ति होगी उतनी ही जनसंख्या वृद्धि की दर कम होगी।

इनका कथन है कि अधिक भोजन की मात्रा सन्तान उत्पादन की शक्ति को कम करती है। इसी तथ्य पर Sadler ने प्रजनन शक्ति में कमी हेतु जनसंख्या घनत्व में वृद्वि को उत्तरदायी माना है।

डबलडे ने अपने सिद्वान्त के अन्तर्गत जनसंख्या के सामान्य सिद्धान्त लागू किया है और मनुष्य को जीवित रहने के लिए खाघ सामग्री की पूर्ति पर बल दिया है। जिसके लिए वह संघर्ष करता रहता है।

जहॉ पर जन्मदर कम होती है वहॉ की प्रकृति जन्म दर को बढ़ा देती है। जिसके कारण जीवन यापन, सहज तथा मृद्धता पूर्ण व्यतीत होता रहता है । और जहॉ पर मृत्यु दर कम होती है उन स्थानों पर प्रकृति प्रजननशीलता में कमी लाकर जनसंख्या का सन्तुलन बनाये रखती है।

डबलडे के अनुसार, जब किसी जीव या वनस्पति की जाति के आस्तित्व पर संकट आ जाता है तब प्रकृति उसके संरक्षण एवं निरन्तरता को बनाये रखने हेतु प्रतिरोधात्मक प्रयास करती है । अर्थात् ऐसी स्थिति में डबलडे के अनुसार, सन्तानउत्पादन की क्षमता तथा प्रजननशीलता बढ़ जाती है । ऐसा विशेष रुप में तब होता है जब कभी भोजन एवं पौष्टिक आधार के अभाव

में किसी जीव अथवा जाति के लिए अस्तित्व का संकट उत्पन्न होता है। उस समय प्रजननशीलता बढ़ जाती है ।

इस उपलब्धता को डबलडे ने दो अवास्थाओं में वार्णित किया हैं

1– **बहुल अवस्था** (Plethoric Stage) – इस अवस्था के सन्दर्भ में डबलडे का कथन है कि इस अवस्था में जीवन यापन हेतु खाघ सामग्री पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहती है जिसको इन्होने समद्ध समाजो अथवा विकसित समाजो से सम्बन्धित बताया है।

इस समाजो में जन्म दर कम तथा प्रजननशीलता में निरन्तर कमी का अनुभव होता है।

2– **अभाव की अवस्था (Deplethoric Stage)**

इस अवस्था को डबलडे ने पिछड़ा एवं गरीबी में जीवन यापन व्यतीत करने वालो से लिया है।

इनमे व्यापक मात्रा में भोजन प्राप्त न होने के कारण जन्म दर बढ़ती रहती है।

इन दोनों अवस्थाओं के बीच की अवस्था का वर्णन करते हुए डबलडे ने कहा है कि बीच की अवस्था में स्थितिया सामान्य होने के कारण प्रजननशीलता एवं जन्म दर स्थिर रहती है।

डबलडे ने अपने इस सिद्वान्त को केवल मनुष्यों पर ही नही, जीव जन्तुओं एवं वनस्पतियों पर भी लागू किया है।

डबलडे के अनुसार आहार अथवा खाद्य सामग्री के प्रकार का सन्तान उत्पादन शक्ति पर अत्याधिक प्रभाव पड़ता है।

मॉसाहारी एवं मोटे व्यक्तियों में प्रजननशक्ति कम तथा शाकाहारी एवं दुर्बल व्यक्तियों में प्रजननशक्ति अधिक पायी जाती है।

मॉसाहारी एवं शाकाहारी दोनों स्थितियों में जीवन व्यतीत करने वाले जनसमुदाय में प्रजननशक्ति सामान्य पायी जाती है। उपरोक्त व्यास्था के निष्कर्ष के रुप में डबलडे ये

स्वीकार करते है कि एक समय ऐसा आयेगा कि जब धनी व्यक्तियों में सन्तानों की निरन्तर कमी के कारण वे अपनी सम्पप्ति को अधिक समय तक अपने वाली पीढ़ियों में हस्तान्तरित नही कर पायेगे और भविष्य में निर्धनों को धनी व्यक्तियों की सम्पप्ति प्राप्त हो जायेगी और निर्ध्रन धनी कहलाने लगेगे।

इस प्रकार असामानताओं के मध्य वितरण की सामान्यता का एक सुन्दर रुप सामने आयेगा जिसका सभी व्यक्ति आदर करेगे।

आलोचना –

डबलडे के आधार सिद्धान्त के विरुद्ध में कई बाते कही गयी है कि डबलडे ने आहार के प्रकार, मोटापा तथा प्रजननशीलता के मध्य जो सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया है वो उचित प्रतीत नही होता है। उन्होंने धनी व्यक्ति से निर्धन व्यक्ति की तरफ संपत्ति के हस्तान्तरण की जो कल्पना की है वह हस्यास्पद है डबलडे ने प्रजननशीलता तथा प्रजननशक्ति को एक ही समझ लिया जबकि प्रजननशक्ति के स्थिर बने रहने पर भी प्रजननशीलता को कृत्रिम उपायों द्वारा रोका जा सकता है।

Reference Books:

1– जनांकिकी by – डॉ0 जे0 पी0 मिश्रा

2– जनांकिकी by – डी0 एस0 बघेल, किरण बघेल